सत्यमेव जयते

महाराष्ट्र राज्य विधानमंडल की बम्बई में संयुक्त बैठक

महाराष्ट्र राज्य के राज्यपाल

श्री. अली यावर जंग

का

भाषण

१४ अगस्त की रात सन् १९७२

माननीय सभापति, माननीय अध्यक्ष, माननीय मुख्यमंत्री, माननीय सदस्यों,

हम आज रात को एक बड़े तारीखी मौके पर जमा हुए हैं। २५ साल हुए इसी रात को हमारी कौम ने जिसका बड़ा शानदार इतिहास रहा था मगर जो अपने आपस के फूट के सबब से गैरों की हुक्मरानी में आ गयी थी, एक बड़े नेता की रहनुमायी में एकट्ठा होकर अपने को रिहा कर देने का फैसला किया और आजादी में अपनी असली जगह पा ली। करीब करीब इसी वक्त २५ वर्ष हुए हिन्दुस्तान के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उस रात कहा था कि आज आखिरकार हम अपनी किस्मत से जा मिले। उस दिन हमने अपनी आत्मा को फिर से पा लिया और दुनिया की आजाद कौमों में इज्जत आबरू के साथ अपनी जगह ली। आज रात हम सबको चाहिए कि उन करोड़ों की दाद दें और उनको आदर के साथ याद करें जिन्होंने

आजादी की जंग में हिस्सा लिया और उनके साथ अपने नेताओं को सलाम भेजें जिन्होंने अपनी खिदमत और त्याग को इस मुहीम में पेश करके हमको इस ऊँचे मुकाम पर पहुंचाया। सबसे बढ़कर आज हमको महात्मा गांधी को याद करना चाहिए।

जब हम इन पिछले २५ सालों पर नजर करते हैं और देखते हैं कि कैसी कैसी नाकामियाँ और कैसी कैसी कामयाबियाँ हमारे हिस्से में आयीं, हमको कितनी जंगों का मुकाबला करना पड़ा जो हमपर लादी गयीं, हमसे कुदरत ने कभी कभी कितनी बेमुरौवती की और इन सबके बावजूद हमने आर्थिक और सामाजिक मैदानों में क्या कुछ तरक्की नहीं की और किस तरह मुल्क में स्थिरता कायम रक्खी तो हमको उन लोगों का शुक्रगुजार होना पड़ता है जिन्होंने इतनी दूरंदेशी से हमारा संविधान बनाया और उसके जरिए से जनता का राज कायम किया। उसीके कारण हम अपनी इन सारी मुश्किलों से पार हो सके। हमारे संविधान ने चंद आर्थिक और सामाजिक उसूल भी कायम किये और हमको बाज मंजिलें भी दिखायीं जिनकी बदौलत हमारा देश लोकतंत्र के रास्ते पर चलने लगा और उसपर अमल करने वाले मुल्कों में सबसे आगे बढ़ गया। आज हमको चाहिए कि अपने इस संविधान से वफादारी का एलान करें जिसने ऐसे तरीकों और ऐसी मंजिलों की हमारे देश में दागबेल डाली। हमारी पार्लियामेंट और इस राज्य का विधान मंडल जनता के ऐसे ही राज की जीती जागती नुमायंदा है।

जनता की मरजी और इरादा इन पिछले २५ सालों में हमारी कौमी जिन्दगी का लाजिमी हिस्सा बन गये हैं। उसी के चुनाव से आप यहाँ जमा हुए हैं और हमारी हुकूमतें कायम हुई हैं जो आपके पास जबाबदेह हैं, उनके कायम रहने के लिए आपका एतमाद जरुरी है। आखिरी सौबत पर आपकी, हमारी हुकूमतों की और हम सबकी वफादारी जनता ही के साथ हो सकती है जो सारी कुवत का सरचश्मा है और जिसके तकाजों को पूरा करना हम सबका फर्ज है।

ये २५ वर्ष तो गुजर गये मगर अब हमको अपने इस २६ वें साल में पीछे नहीं, आगे देखना है। हमारा भविष्य हमारा ही बनाया हुआ हो सकता है। २५ साल की मुद्दत किसी कौम की जिन्दगी में बहुत ही थोड़ी होती है। हमारे ये साल बड़े कठिन मगर साथ ही साथ बड़े कीमती गुजरे हैं जिनका आज हम फल पा रहे हैं। हमारा आने वाला जमाना भी मुश्किलों से खाली नहीं होगा क्योंकि सदियों के पिछड़ेपन और गरीबी और नाबराबरी को दूर करना आसान नहीं है मगर आज के दिन हम अपने पिछले तजुर्बों के कारण उनका मुकाबला करने के बहुत ज्यादा काबिल हो गये हैं। इस छोटी जिन्दगी में हमने फकत अपने को नहीं बल्कि दूसरों को भी ये बता दिया कि हम अपने पाँव पर खड़े हो सकते हैं। हमको अपने और अपनी नेता पर भरोसा है जिनकी रहनुमायी में हाल ही में हमने फतेह भी पायी और सुलह की बुनियाद भी डाल दी।

जहाँ मुल्क में तरक्की और मुल्क के अतराफ अमन की मंजिलें दूर मालूम होती हैं वहां दोनों के तकाजे वक्त को तंग कर रहे हैं। जाहिर है कि मंजिल जितनी दूर होती है उसी कदर तेजी के साथ कदम बढ़ाना पड़ता है।

हमारी तहजीब बहुत पुरानी है मगर आजादी के मानों में हम अभी जवान हैं। नये ख्याल, नये इल्म, नयी मांगों की इस बदलती हुई दुनिया में आगे कदम रखते हुए हमको अपने बाज गयी गुजरी बातों को छोड़ देना पड़ेगा क्योंकि उनका बोझ लिए हुए हम तेजी के साथ आगे नहीं बढ़ सकेंगे। उसके साथ साथ हमारी सभ्यता ने हमको जो बाज कदरें सिखायी और जो रखरखाव और इंसानियत के उसूल बताये उनको हम अपने हाथ से जाने नहीं दे सकते। इन पुरानी कदरों और नये हौसलों के आप पासबान हैं। आप फकत कानून नहीं बनाते बल्कि आगे की नीतियों पर भी नजर रखते हैं। मुझे यकीन है कि उस काम में हमारे पिछले सबक और आगे की दावतें आपके और हम सबके कदमों को सही मुकाम पर पहुंचायेंगी।

● ●